विकास मिश्रा

इण्डियाज़ साइंटिफिक विज़्डम इमर्जिंग वर्ल्डव्यू

भारतीय विज्ञान लेखक संघ (ISWA), इण्डियन साइन्स कम्यूनिकेशन सोसाइटी (ISCOS), यूनेस्को (UNESCO), साइन्स एण्ड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड (SERB, INDIA) के संयुक्त तत्वावधान में हरियाणा भवन, नई दिल्ली में 'इण्डियाज़ साइंटिफिक विज़्डम : इमर्जिंग वर्ल्डव्यू' विषय पर 27 एवं 28 फरवरी, 2016 को राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विज्ञान एवं पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, पत्रकारों एवं शोधार्थियों ने अपने शोधपत्रों के माध्यम से भारतीय वैज्ञानिक बुद्धिमत्ता एवं ज्ञान परम्परा पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में सांसद एवं पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के केन्द्रीय मन्त्री प्रो. मुरली मनोहर जोशी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् के पूर्व प्रमुख प्रो. कमलकान्त द्विवेदी, इण्डिया मेटीयोरोलॉजिकल डिपार्टमेंट के महानिदेशक डॉ. एल. एस. राठौर, विश्व हिन्दू सम्मेलन के स्वामी विज्ञानानन्द, प्रसार भारती के अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, भारतीय विज्ञान लेखक संघ के राष्ट्रीय सचिव वी. पी. सिंह ने विज्ञान दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन का शुभारम्भ किया।

मुख्य अतिथि उद्बोधन में प्रो. जोशी ने प्राचीन भारतीय सुविकसित ज्ञान परम्परा की चर्चा तत्कालीन प्रासंगिक उदाहरणों के साथ की तथा कहा कि हमारा विज्ञान प्राचीन काल से ही अत्यन्त विकसित रहा है। हमें अपनी ज्ञान परम्परा पर गर्व करते हुए उसे आगे बढ़ाने का दायित्व निभाना चाहिए। हमारा वैज्ञानिक एवं दार्शनिक पक्ष अत्यन्त विकसित एवं समृद्ध रहा है। प्राचीन वैज्ञानिक एवं गणितीय सूत्रों को समझकर नवीन ज्ञान का सृजन करने की आवश्यकता है। उन्होंने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सत्य एक है', 'विविधता में एकता' को तीन प्रमुख स्तम्भ बताया।

प्रो. कमलकान्त द्विवेदी ने कार्यक्रम का बीजपत्र प्रस्तुत किया तथा 'कॉन्सेप्ट ऑफ टाइम' विषय पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए 'समय का वैदिक कॉन्सेप्ट', 'टाइम डाइलेशन', 'समय का अन्तहीन चक्र', 'रिलेटिविटी ऑफ टाइम', 'दिन का विभाजन' आदि पक्षों से सम्बन्धित अनुत्तरित प्रश्नों को प्रस्तुत किया। स्वामी विज्ञानानन्द ने वर्तमान तथा प्राचीन ज्ञान के सम्मिलित प्रयोग व समन्वय पर बल दिया। प्राचीन गूढ़ रहस्यों एवं ज्ञान को समझने के लिए देववाणी संस्कृत के उचित ज्ञान की आवश्यकता बताई। इससे पूर्व डॉ. मनोज कुमार पटैरिया ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए स्वागत सम्बोधन द्वारा अतिथियों का परिचय कराया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. एल. एस. राठौर ने भारतीय सभ्यता को समस्त सभ्यताओं का केन्द्र बिन्दु बताया तथा इसे समाज के उत्थान से सम्बन्धित कहा। समस्त ज्ञान-विज्ञान की जननी भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने एवं आगे बढ़ाने की

बात की। स्पंदन संस्था से पधारे अनिल सौमित्र ने उद्घाटन सत्र में पधारे अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राष्ट्रगीत के साथ उद्घाटन सत्र सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न उपविषयों से सम्बन्धित पांच तकनीकी सत्रों तथा पैनल डिस्कशन का आयोजन हुआ। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता सी.बी.आर.आई. के पूर्व निदेशक डॉ. आर. के. भण्डारी ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. लक्ष्मण प्रसाद उपस्थित थे। इस तकनीकी सत्र का शीर्षक 'साइंटिफिक विज़्डमः द जिनैसिस' था जिसमें डी.आर.डी.ओ. के डॉ. फूलदीप श्योरॉन, डॉ. रीता मलिक, खुशबू शर्मा, गौरव शर्मा आदि ने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। द्वितीय तकनीकी सत्र 'साइंटिफिक विज़्डमः एविडेंस बेज़्ड रिअप्रैजल' विषय पर था, जिसके अध्यक्षता कृषि विज्ञान केन्द्र बसर, अरूणांचल प्रदेश के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सी.एस. राघव ने की। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. के. एस. चरक ने अपना शोध-परक व्याख्यान दिया। सत्र के दौरान डॉ. अरविन्द मिश्रा, अमरनाथ शुक्ला, अंकित अवस्थी आदि ने प्रस्तुतीकरण किया।

तत्पश्चात् लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ए. पी. सिंह की अध्यक्षता में पोस्टर सेशन का आयोजन हुआ। पोस्टर सेशन का मूल्यांकन तारिक बदर, वी. पी. सिंह, डॉ. लता चन्दोला, डॉ. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ. विकास मिश्रा ने किया। इस सत्र में साइन्टिफिक विज़्डम के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में श्रुति माथुर, बाल गोविन्द वर्मा, सलोनी, विमलेश कुमार, चांदनी सिंह, रोमित मिश्रा, भुवन पी., चन्दराजू एस., मोहित कुमार रस्तोगी, अदिति श्रीवास्तव आदि ने प्रस्तुतीकरण दिया। ईवनिंग टॉक के दौरान केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने 'साइन्टेन्मेंट प्रोग्राम' द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को रोचक ढंग से साइन्टून के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा जटिल वैज्ञानिक तथ्यों एवं नैनोटेक्नोलॉजी को समझाने का प्रयास किया। 'विज्ञान आओ करके सीखें' पत्रिका के प्रधान सम्पादक दीपक शर्मा ने 'जनसामान्य के लिए विज्ञान लेखन' पर विस्तृत प्रकाश डाला।

प्रो. जोशी का स्वागत करते डॉ. मनोज कुमार पटैरिया

उद्घाटन सत्र में विज्ञान दीप प्रज्ज्वलित करते सांसद प्रो. मुरली मनोहर जोशी व अन्य अतिथिगण

मुख्य अतिथि उद्बोधन में प्रो. जोशी ने प्राचीन भारतीय सुविकसित ज्ञान परम्परा की चर्चा तत्कालीन प्रासंगिक उदाहरणों के साथ की तथा कहा कि हमारा विज्ञान प्राचीन काल से ही अत्यन्त विकसित रहा है। हमें अपनी ज्ञान परम्परा पर गर्व करते हुए उसे आगे बढ़ाने का दायित्व निभाना चाहिए।

तृतीय तकनीकी सत्र 'साइंटिफिक विज़्डमः कनेक्टिंग लिंक्स फ्रॉम व्हेयर वी लेफ्ट' विषय पर था। सत्र की अध्यक्षता 'दूरदर्शन-समाचार' के वरिष्ठ परामर्श सलाहकार के. जी. सुरेश ने की, प्रमुख वक्ता प्रो. राजाराम यादव थे। सत्र के दौरान डॉ. मनोज मिश्रा, धर्मेन्द्र कुमार, ज्योति शुक्ला के प्रस्तुतीकरण सराहनीय रहे। तत्पश्चात् 'साइंटिफिक विज़्डम : रीशेपिंग द इमर्जिंग वर्ल्डव्यू' विषय पर चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन हुआ। सत्र की अध्यक्षता वैज्ञानिक एवं विज्ञान प्रगति के पूर्व संपादक डॉ. प्रदीप शर्मा ने की। सत्र के दौरान डॉ. शर्मा ने विषय के सम्बन्ध में तथ्यपरक सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। इस सत्र में तारिक बदर, रूचि सिंह गौर, डॉ. अभिनव सिंह, डॉ. सीता त्रिपाठी, डॉ. संजय कुमार के प्रस्तुतीकरण थे।

पंचम तकनीकी सत्र का विषय 'साइंटिफिक विज़्डम : द रोल ऑफ साइंटिफिक कल्चर' था। सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (CARI) की डॉ. राखी मेहरा ने की, विशिष्ट वक्ता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय वाउण्ड्रीज के प्रमुख डॉ. एम. सी. तिवारी की उपस्थिति रही। इस सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. वी. एन. मिश्रा, डॉ. लता चन्दोला, डॉ. अपूर्व पौराणिक,

मुख्य अतिथि प्रो. मुरली मनोहर जोशी के साथ सामूहिक चित्र

सोनाली भण्डारी, सारिका घारु, प्रो. जी.एस. पालीवाल ने शोधपरक प्रस्तुतीकरण दिये।

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया की अध्यक्षता में 'साइंटिफिक विज़्डम : द वे फॉरवर्ड' विषय पर 'पैनल डिस्कशन' हुआ, जिसमें प्रतिभागियों एवं मंचासीन विशेषज्ञों द्वारा सम्मेलन की सार्थकता के सम्बन्ध में सारगर्भित निष्कर्ष निकाले गये।

सम्मेलन के समापन सत्र में हरियाणा सरकार के वरिष्ठ अधिकारी राजकुमार भारद्वाज मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः' की भारतीय वैज्ञानिक परम्परा पर प्रकाश डाला तथा किसानों से आग्रह किया कि वे अपने तथा दूसरों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए खेतों में अनुचित व अत्यधिक रसायनों का प्रयोग न करें। डॉ. मनोज कुमार पटैरिया ने विचारों का समन्वय प्रस्तुत करते हुए विभिन्न अनुसंधानों को लैब से लैण्ड तक लाने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि समाज के उत्थान हेतु बड़े विज्ञान के साथ-साथ छोटे विज्ञान की भी अत्यधिक आवश्यकता है। कार्यक्रम के अन्त में भारतीय विज्ञान लेखक संघ के राष्ट्रीय सचिव वी. पी. सिंह ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

युवाओं एवं दिव्यांगों को मिला विशेष प्रोत्साहन

सम्मेलन के दौरान देश के विभिन्न प्रांतों से आए युवा प्रतिभागियों एवं दिव्यांग प्रतिभागियों को प्रपत्र प्रस्तुतीकरण के साथ ही पोस्टर सेशन एवं ग्रुप डिस्कशन में वरीयता देकर विज्ञान लेखन एवं शोधकार्य हेतु प्रोत्साहित किया गया।

सम्मेलन के दौरान निकले सारगर्भित निष्कर्ष

- भारतीय ज्ञान परम्परा (Ancient Wisdom) को उभारकर लिपिबद्ध किया जाए।
- कठिन शब्दावली के कारण वैदिक साहित्य एक रहस्य बना हुआ है। अतः कठिन भाषा में लिखे गये प्राचीन भारतीय ज्ञान भण्डार एवं वैज्ञानिक तथ्यों को सरल व्यावहारिक भाषा में अनुवादित किया जाए।
- इण्डियन साइंटिफिक विज़्डम पर एक वेबसाइट बनाई जाए जिस पर लोग विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ी भारतीय सम्पदा को अपलोड करें तथा उनका प्रशिक्षित टीम द्वारा उनकी जांचकर संयोजन (Compilation) किया जा सके। इसके अलावा वेबसाइट पर भारतीय वैज्ञानिकों की उत्कृष्ट खोजों एवं जीवन परिचय का उल्लेख हो।
- भारतीय मान्यताओं/व्यवहार/पौराणिक क्रिया-कलापों का वैज्ञानिक परीक्षण कर, उचित व कसौटी पर खरे उतरने वाले व्यवहारों व मान्यताओं को प्रचलन में लाया जाए।
- शोधों के निष्कर्षों को प्रसारित करने के लिए मीडिया सेल की स्थापना की जाए, जिसमें साइंटिफिक टैम्पर वाले पत्रकारों को रखा जाए।
- शोध निर्णय केन्द्रित हों, न कि निष्कर्ष केन्द्रित।
- स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर ही कृषि व किसान पर शोध हों।
- शोध-पत्रों की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित की जाए।
- पत्रकारों एवं वैज्ञानिकों को संचार सम्बन्धी प्रशिक्षण प्रदान किए जाएं।
- प्रतिभागियों की सम्पर्क-सूचना (Contact Information) को सभी प्रतिभागियों को दी जाए। इससे प्रचार-प्रसार का दायर बढ़ेगा।
- सम्मेलनों में प्रस्तुत शोध-पत्रों का प्रकाशन किया जाए।
- संस्कृति व विज्ञान में समन्वय स्थापित किया जाए। वेबसाइट्स पर फ्री डेटा एक्सेस हो, जिससे डिजिटल इंडिया का सपना साकार होगा।
- वैज्ञानिकों व पत्रकारों का पारस्परिक संवाद (Interaction) कम है। अतः वैज्ञानिक, पत्रकारों को उनकी भाषाशैली में समझाएं।
- प्राचीन ज्ञान परम्परा का अध्ययन कर वर्तमान में प्रासंगिक तथ्यों को खोजकर, उनकी सार्थकता वैज्ञानिक विधि से सिद्ध कर, जनसामान्य में प्रचार-प्रसार किया जाए।
- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं उच्च कोटि के भारतीय वैज्ञानिकों को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई जाए।
- शोधों में गुणवत्ता लायी जाए।
- पुस्तकालय को सर्व सुलभ करना कठिन एवं अर्थसाध्य है। अतः डिजिटल लाइब्रेरी को बढ़ावा दिया जाए।
- विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्रिया-कलापों से युवाओं को जोड़ें तथा सक्रिय रखें।
- उचित जानकारी के अभाव में अंधाधुंध कीटनाशकों, रसायनों एवं रासायनिक खादों के प्रयोग ने लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। उचित प्रयोग की जानकारी के साथ-साथ उन्हें परम्परागत खेती एवं जैविक खाद की प्राचीन परम्परा को अपनाने हेतु प्रेरित करें। इनके प्रयोग की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत कर जागरूकता लाएं।
- प्रायः सरकारी बेबसाइट अपडेट नहीं रहती हैं। अतः समयबद्ध कालान्तर पर उनके डाटा को अपडेट किया जाए।
- भारत की अन्य पड़ोसी देशों से लगी सीमाओं का यथार्थ चित्रण किया जाए।

संपर्क सूत्र :
डॉ. विकास मिश्रा, विज्ञान संचारक
111/358, अशोक नगर
कानपुर 208 012 (उ.प्र.)
[मो. : 09450686652;
ई-मेल : vikas625@gmail.com]